IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19712254

ISSN : 3048-6971

शिक्षा में ललित कलाओं का स्थान

अम्बालाल जेदिया
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
कमला नगर,
जोधपुर (राजस्थान)

डॉ. राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध निर्देशक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर
(राजस्थान)

मानव भावनाओं की सुन्दरतम् अभिव्यक्ति का साकार रूप ही कला है। जब मानव अपने किसी गुण की अभिव्यक्ति सुन्दर एवं आकर्षक ढ़ंग से करता है तो उसके उस गुण की अभिव्यक्ति 'कला' का रूप ले लेती है।

कला का उदय मानव की सौन्दर्य भावना को उजागर करता है। कला में शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। मन के अन्तःकरण की सुंदर प्रस्तुति ही कला है। कला की व्याख्या– रविन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। प्लेटो के अनुसार सत्य की अनुकृति ही कला है। कला ही जीवन है।

कला का ज्ञान मानव के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। यह मनुष्य का मानसिक शक्तियों का विकास करके उसे पशुत्व से ऊपर उठाता है। कहा भी है –

''साहित्य संगीत कला विहीन।
साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीन।।''

अर्थात् साहित्य, संगीत और कला के बिना मनुष्य बिना पूँछ पशु के समान है।

कला अपने अनेक सुंदरतम् रूपों में मानव जीवन के रोम–रोम में बसी हुई है। कला जीवन को 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' से समाहित करती है।

हमारे यहाँ मुख्य से 64 कलाओं को माना गया है। मानव सभ्यता के साथ–साथ ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है। 64 कलाओं में पाँच कलाएँ प्रमुख है जिनको ललित कलाएँ कहते है वह है–
काव्य कला, संगीत कला, चित्रकला, मूर्तिकला एवं वास्तुकला

1. शब्द तथा भाषा के माध्यम से भाव व्यक्त करने पर – काव्यकला
2. सप्त स्वरों के माध्यम से भाव व्यक्त करने पर – संगीतकला
3. प्रकृति के दृश्यों को चित्रफलक पर उतारने पर – चित्रकला
4. भावों को मूर्ति के रूप में प्रतिपन्न करने पर – मूर्तिकला
5. भवन निर्माण के रूप में – वास्तुकला

हींगल ने सर्वप्रथम ललित कलाओं तथा उपयोगी कलाओं का विभाजन किया। ललित कलाओं का विस्तृत वर्णन करते हुए हींगल ने कला के तीन वर्ग बताये जो निम्न है–

1. प्रतीकवाद 2. शास्त्रीय 3. रोमानी

ललित कला के लिए आवश्यक है कि उसमें सौन्दर्य, माधुर्य, सहजता, सरलता, प्रसाद, प्रवाह और ओज हो लयात्मकता लालित्य का प्रमुख गुण है। संगीत, काव्य और चित्रकला में ये सभी गुण पाये जाते है।

सभी कलाएँ मन की शांति, आनंद और प्रेरणा प्रदान करती है। संगीतकला में एक विशेष गुण और भी है कि वह सामर्थ्य में मनुष्य के अतिरिक्त पशु–पक्षियों को भी आकर्षित करता है। अन्य ललित कलाओं में यह सामर्थ्य नहीं है। काव्य, चित्रकला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला बुद्धि के संयोग से ही भावों का उत्कर्ष कराने में सफल होती है।

शॉपेन हॉवर का कहना है– ''केवल संगीत ही ऐसी कला है श्रोताओं से सीधा सम्बन्ध रखती है। इसे किसी माध्यम की आवश्यकता नही होती।''

गीत, वाद्य, नृत्य तीनों संगीतकला के अन्तर्गत आते है। इनके सम्मलित प्रयोग से संगीत में भाव एवं शक्ति बढ़ जाती है। इसलिए संगीत को ''ब्रह्मानन्द सहोदर'' आनन्द प्रदान करने वाली कला कहा गया है।

संगीत कला अधिक प्रभाव डालने वाली कला है। मनुष्य के हृदय में सोए हुए भावों को जगाने में संगीत जितना सक्षम है। उतनी कोई और विद्या नहीं है।

लॉटरी खुलने की प्रसन्नता न भाषा से व्यक्त की जा सकती है और न ही चित्र से। उसकी अभिव्यक्ति नाचने, कूदने और उन्मत गान से ही संभव है। इसी प्रकार पुत्र–शोक, प्रिय–बिछोह और समर्पण इत्यादि के भाव संगीत के द्वारा शीघ्र जाग्रत हो जाते है।

अतः सभी ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोपरि है, क्योंकि वह गतिशील है, आन्दानुभूति कराने और भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। चर और अचर पर प्रभाव डालने में समर्थ है। लोकारंजक है और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाला है।

संगीत कला एक ऐसी कला है जो आत्मा में नैतिक मूल्यों को विकसित में बहुत अधिक योगदान देती है। संगीत मानव के हृदय की भाषा है, जहाँ शब्दों की कोई दीवार नही है। इसलिए संगीत के माध्यम द्वारा कही गयी बात प्राणी मात्र पर अन्य साधनों की अपेक्षा अधिक जादुयी प्रभाव छोड़ती है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि यदि जीवन का लक्ष्य आत्मा का उत्थान कर परमात्मा तक पहुँचना है और परमानन्द या अतिन्द्रिय सुख पाना है तो इसमें संगीत कला महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

काव्य, चित्र, वास्तुकला एवं मूर्तिकला बुद्धि के संयोग से ही भावों का उत्कर्ष कराने में सफल होती है।

वास्तव में देखा जाए तो चित्र, काव्य और संगीत तीनों ललित कलाएँ एक दूसरे से अलग होते हुए भी आपस में इस प्रकार से जुड़ी हुई है जैसे कि– कपड़ा और सूत।

संगीतकार धुन बनाते समय किसी चित्र की कल्पना करते है, कवि अपने काव्य की रचना करते समय अमूर्त्त स्वरों को छन्द का वाहन बनाता है। इसी प्रकार चित्रकार या मूर्तिकार शब्द के आश्रय से विषयवस्तु को अपने मस्तिष्क में कोई आकार देता है और तब उसे मूर्त्त रूप प्रदान करता है।

संगीत, काव्य और चित्र तीनों ललित कलाओं में केवल एक चीज सामान्य है और वह है– लय।

लय पर ही तीनों कलाओं का सौन्दर्य अवलम्बित होता है। संगीत में लय उसका प्रधान तत्व है, इसलिए लय की सम्पूर्ण शक्ति 'संगीत कला' में निहित रहती है। इसी कारण से सभी ललित कलाओं में संगीत सर्वोपरि है। यह गतिशील है एवं आन्दानुभूति कराने और भावभिव्यक्ति में सक्षम है।

अतः कहा जा सकता है कि मनुष्य के जीवन एवं शिक्षा के सर्वांगीण विकास हेतु सभी पाँचों ललित कलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।